खुदाबख्श ओरिएन्टल लाईब्रेरी के नवनिर्मित भवन के उद्घाटन–समारोह में श्री राम नाथ कोविन्द का संबोधन

दिनांक–12.06.2017, समय–पूर्वा॰ 11.30 बजे, स्थान–खुदाबख्श लाईब्रेरी, पटना)

खुदाबख्श ओरिएन्टल लाईब्रेरी के नवनिर्मित भवन के उद्घाटन–समारोह में प्रमुख रूप से उपस्थित प्रधान सचिव डॉ॰ बाला प्रसाद जी, गाँधीवादी विचारक तथा खुदाबख्श लाईब्रेरी बोर्ड के मेम्बर डॉ॰ रजी अहमद जी, प्रो॰ शरफे आलम जी, लाईब्रेरी के निदेशक श्री आनंद किशोर जी, कार्यक्रम में मौजूद सभी विद्वद्जन, पुस्तकालय के पाठकगण, मीडिया–प्रतिनिधिगण, देवियों एवं सज्जनों!!

आज ऐतिहासिक खुदाबख्श ओरिएन्टल लाईब्रेरी परिसर में नवनिर्मित भवन के उद्घाटन–समारोह में उपस्थित होकर, मुझे बहुत खुशी हो रही है।

मित्रों, अपना संबोधन शुरू करते हुए मैं प्रख्यात चिन्तक जॉर्ज लूईस बोर्गेज का एक कथन उद्धृत करना चाहता हूँ। उन्होंने एक जगह लिखा है कि ''I have always imagined that paradise will be a kind of library''–अर्थात् ''मैंने हमेशा कल्पना की है कि स्वर्ग एक तरह के पुस्तकालय की ही शक्ल में होगा और पुस्तकालय की ही तरह होगा।'' मुझे बोर्गेज का यह कथन सच्चाई के बिल्कुल करीब लगता है। स्वर्ग में अगर शांति मिलती है, शुकून मिलता है, ज्ञान मिलता है, आनन्द मिलता है, सुन्दर साहचर्य मिलता है–तो आप ही बताइए, इसमें क्या है, जो पुस्तकालयों में नही मिलता है? यहाँ बैठे पढ़ रहे लोगों में शांति देखिये, उनकी गंभीरता देखिये, उन्हें मिल रहे आनंद के बारे में उनसे पूछिये, एक–दूसरे के सुन्दर साहचर्य और सौजन्य के बारे में पूछिये–ये सारी बातें, पुस्तकालयों में एक जगह इंसान को नसीब हो जाती हैं। फिर ये पुस्तकालय स्वर्ग से किस मायने में कम अहमियत रखते हैं? ये दीगर बात है कि इलेक्ट्रॉनिक विकास और सूचना क्रांति के युग में हमारे लिए ज्ञानवर्द्धन के अन्य कई साधन भी आज उपलब्ध हैं। परन्तु इन साधनों की अतिशय उपलब्धता ने हमारे ज्ञान–क्षितिज को फैलाने के साथ–साथ, हमारी संवेदना की धार को कई अर्थों में कुंद भी किया है। हम पुस्तकालय में पहुँचकर किताबों से जो रिश्ता बनाते हैं, वह कई मायनों में विशिष्ट होता है। पुस्तकों के साथ इंटरनेटी रिश्ता भावनात्मक नहीं होता। कठिनाईपूर्वक, थोड़ी मेहनत–मशक्कत के बाद किसी के साथ कायम किया गया रिश्ता ज्यादा संवेदनशील होता है, गहराई वाला होता है –बात चाहे इन्सानी रिश्ते की हो या फिर किताबों के साथ रिश्ते की।

खुदाबख्श साहब ने जब इस रिश्ते को गहराई से समझा था, तभी इस पुस्तकालय की स्थापना की थी। यह लाईब्रेरी कुछ खास धरोहरों की तरह आज बिहार की पहचान बन चुकी है। और अब समय आ गया है कि हम अपनी इस धरोहर को सजाने–सँवारने के प्रति और ज्यादा संजीदगी से विचार करें।

मुझे बताया गया है कि खुदाबख़्श ओरिएन्टल पब्लिक लाइब्रेरी देश के प्रमुख प्राचीन पुस्तकालयों में से एक है। इसे 1969 में भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय महत्व का संस्थान घोषित किया गया है। वर्तमान में यह भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय के अधीन एक स्वायत्त संस्थान है। आप सभी अवगत हैं कि इस पुस्तकालय की विधिवत स्थापना सन् 1891 ई॰ में हुई और तब से ही यह अरबी और फारसी की दुर्लभ पाण्डुलिपियों के संग्रह–केन्द्र के रूप में विद्वानों और शोधार्थियों के आकर्षण का केन्द्र बना हुआ है। इसे देखने के लिए भारत के कई तत्कालीन वायसराय, राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, राज्यपाल, मुख्यमंत्री और विदेशी विशिष्ट अतिथि भी आते रहे हैं।

संस्थापना के समय इस पुस्तकालय में 4000 पाण्डुलिपियाँ थीं, जिनकी संख्या में निरंतर वृद्धि होती गई है और अभी 21000 से अधिक पाण्डुलिपियाँ यहाँ सुरक्षित हैं, जिनमें अरबी और फारसी के साथ उर्दू, उजबेक, हिन्दी और संस्कृत भाषाओं की दुर्लभ पाण्डुलिपियाँ भी मौजूद हैं।

पुस्तकालय के आधुनिकीकरण के लिए विगत दो दशकों में कई महत्वपूर्ण प्रयास हुये हैं। इनमें सबसे महत्वपूर्ण पाण्डुलिपियों के Digitization की प्रक्रिया है, जिसका पहला चरण सम्पन्न हो चुका है और अब इसकी छाया–प्रति इन्टरनेट द्वारा पाठकों और शोधार्थियों को उपलब्ध कराने की व्यवस्था हो रही है। इस पुस्तकालय में विभिन्न भाषाओं और विषयों की लगभग तीन लाख पुस्तकें उपलब्ध हैं, जो शोधार्थियों और पाठकों के लिए उपयोगी हैं। इसके साथ ही श्रव्य एवं दृश्य (Audio Visual) सामग्रियों के रूप में अभिलेखागार के अन्तर्गत पुस्तकालय में होने वाली बौद्धिक और सांस्कृतिक गतिविधियों को भी सुरक्षित रखा गया है।

मित्रों, आप सब जानते हैं कि हमें सभी कार्यों को सुचारू ढंग से चलाने में पिछले कुछ वर्षों में कठिनाई हो रही थी, क्योंकि पुस्तकालय में पर्याप्त जगह का अभाव था। यह पुस्तकालय मूलतः खानबहादुर खुदाबख़्श जी की पाण्डुलिपियों एवं पुस्तकों के संग्रह के रूप में आरम्भ हुआ था। खुदाबख़्श जी की यह वसीयत थी कि इन पाण्डुलिपियों को कहीं और स्थानान्तरित नहीं किया जाये। उनकी इसी इच्छा के सम्मान में आज भी यह पुस्तकालय इसी परिसर में कार्यरत है। तथापि, जहाँ तक संभव है, इसकी आधारभूत संरचनाओं को विकसित करते हुए इसे हम एक अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के पुस्तकालय की आवश्यकताओं के अनुरूप बनाने के प्रयास कर सकते हैं।

पुस्तकालय के इसी परिसर में छात्रों, युवाओं एवं वरीय नागरिकों की सुविधा के लिए 'कर्ज़न रीडिंग रूम' के नाम से सार्वजनिक वाचनालय की स्थापना खुदाबख़्श जी द्वारा सन् 1905 ई0 में की गई थी, जो आज भी सक्रिय है।

1983 ई0 में पुस्तकालय–भवन का पहली बार विस्तार हुआ था और तब एक अतिथिशाला एवं सभागार का यहाँ निर्माण हुआ था। परन्तु, पुस्तकों के भंडारण की क्षमता उस समय तब बढ़ाई नहीं जा सकी थी और इसी बीच नई पुस्तकों के आ जाने के कारण

जगह की काफी किल्लत होती गई। इस कठिनाई को दूर करने के लिए पुस्तकालय भवन के दोबारा विस्तार की जरूरत महसूस की गई और आज उप–भवन का निर्माण इसी आवश्यकता की प्रतिपूर्त्ति का एक सार्थक प्रयास है।

आज इसका उद्घाटन करते हुए मुझे बेहद खुशी हो रही है। आशा है कि अब पुस्तकालय में स्थान की कमी की समस्या का निदान यथासंभव रूप में हो सकेगा और इसकी गतिविधियों में भी पर्याप्त विस्तार नजर आएगा। इस पुस्तकालय का सवा–सौ वर्षों से भी अधिक का गौरवशाली इतिहास रहा है। मुझे आशा है कि इस समृद्ध परम्परा को आगे भी बनाये रखा जायेगा। आने वाले दिनों में यह पुस्तकालय प्रगति के नए आयाम प्राप्त कर सके, यह मेरी दिली शुभकामना है। किसी शायर ने लिखा है कि–

''जमाना मुझको मेरे बाद भूल जाएगा
मैं बहरहाल किताबों में मिलूँगा तुझको।''

–इंसानी जिस्म मिट जाते हैं, परन्तु उसकी कारगुजारियाँ किताबों में दर्ज हो जाती हैं। खुदाबख्श साहब की शोहरत यह लाईबेरी आज हमारी अनमोल धरोहर बन चुकी है। पुस्तकालयों के विकास का इतिहास मनुष्य की सभ्यता के विकास से जुड़ा हुआ है। आइये, हम अपनी आगामी पीढ़ियों के लिए खुदाबख्श लाईब्रेरी की खुबसूरती को और अधिक बढ़ाने का संकल्प लें। आप सबको बहुत–बहुत धन्यवाद!

जय हिन्द!!

***

प्रस्तुति–जन–सम्पर्क शाखा, राजभवन, पटना।